मिथक कथा परंपरा और लोकनाट्य

अभिषेक त्रिपाठी, *पीएच.डी. शोधार्थी,हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र*

सारांश-

भारतीय कला, साहित्य पर दृष्टिपात करें, तो 'मिथक' एक समृद्ध कथा स्रोत के रूप में उभर कर सामने आता है| मिथक की कलात्मकता, उसमें वर्णित कथाओं की विविधता तथा उसमें समाहित जीवन के विविध आयाम बार-बार कला एवं साहित्य को उसकी ओर रुख करने को अभिप्रेरित करते हैं| साहित्य के तमाम रूपों पर अपनी छाप छोड़ने के साथ ही मिथक नाटक और रंगमंच का भी महत्वपूर्ण विषयस्रोत रहा है| रंगमंच के क्षेत्र में मिथक की उपस्थिति लौकिक परंपरा के पारंपरिक रंग कर्म 'लोकनाट्यों' में भी देखी जा सकती है| भारत के कोने-कोने में प्रदर्शित होने वाले अनेक लोकनाट्य रूपों में मिथकीय कथा (रामायण, महाभारत आदि की कथा) का मंचन, प्रदर्शन होता चला आ रहा है| मिथकीय कथाओं और लोकनाट्य रूपों में बहुत से मामलों में समानता की स्थिति बनती है; लौकिक परंपरा की गहरी अनुगूँज दोनों ही परम्पराओं में मौजूद है| मिथक और लोकनाट्य के गहरे गठजोड़ का यह भी एक प्रमुख कारण है|

मिथक और लोकनाट्यों के अंतर्संबंध को प्रभावी तरीके से स्पष्ट करने के लिए इस अध्ययन में भारतीय लोकनाट्य परंपरा में मिथकीय कथाओं की उपस्थिति को चिन्हित करने का प्रयास किया है|

मुख्य शब्द-

मिथक कथा
लोकनाट्य

'मिथक' शब्द एक बहुत ही व्यापक शब्द है, पर इसकी व्यापकता के बावजूद इसके अर्थ को लेकर बहुत से लोगों में मन-मानस में भारी गलतफहमी व्याप्त है| बहुत से लोग मिथक का अर्थ 'मिथ्या' से लेते है, पर यथार्थ में मिथक और मिथ्या में जमीन-आसमान का अंतर है| मिथक का अभिप्राय ऐसी कथा से है, जो तथ्यात्मक इतिहास तो नहीं होती, पर गहराई से देखें तो यह इतिहास से कम भी नहीं है; इसे मानव के 'सांस्कृतिक इतिहास' के रूप में देखा जा सकता है| जनमानस का अटूट विश्वास और स्वयं में समाहित गूढार्थ इसकी ताकत है; और इसी के बल पर यह एक समय से दूसरे समय की यात्रा करती हुई सार्वकालिक हो जाती है|

मिथक किसी की वैयक्तिक रचना होने की बजाय सामूहिक अवचेतन की अभिव्यक्ति है| इसमें समाहित गहराई ही है कि कला, साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाएं भी अपने कथा स्रोत के लिए इसकी ओर रुख करती रहीं हैं| इस दृष्टि से लोकनाट्य भी पीछे नहीं ठहरता; लोकनाटकों में भी मिथक की उपस्थिति व्यापक रूप से महसूस की जा सकती है।

लोकनाटक लोक की सहज अभिव्यक्ति होती है। ऐसे में मिथक और लोकनाटकों के अंतर्संबंधों को सरलता से समझा जा सकता है। दोनों के मूल में लोक है। दोनों ही लोक के विशाल फलक पर रचित और परंपरित हैं। दोनों के बीच कहीं न कहीं एक विशिष्ट किस्म का आत्मीय संबंध है।

भारत में तमाम लोकनाट्य रूप प्रचलित हैं। इन्हें मोटे तौर पर दो प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है- (1) लौकिक, (2) धार्मिक। इन दोनों ही प्रकार के लोकनाट्य रूपों में मिथक की उपस्थिति को चिन्हित किया जा सकता है। रामायण और महाभारत मिथक के मज़बूत स्रोत रहे हैं, और भारत में प्रचलित तमाम लोकनाटकों में इनके प्रसंगों को उठाया जाता रहा है।

भारत में प्रचलित लोकनाट्यों, यथा- रामलीला, रासलीला, अंकिया नाट्य, यक्षगान,

तमाशा, दशावतार, नौटंकी आदि सबमें मिथकीय कथाएँ मौजूद हैं। रामलीला का तो एक मात्र स्रोत रामकथा ही है। रामलीला और रासलीला जैसे नाट्य रूप विष्णु के अवतार रूपों को एक संपूर्ण आदर्श और अनुकरणीय चरित्र के रूप में विकसित करते दिखाई देते हैं। रासलीला में कृष्ण का लीला रूप प्रदर्शित होता है। 'रासलीला' रामलीला के समानांतर विकसित होने वाली नाट्य लीला है। रासलीला में नृत्य, गीत और संगीत की प्रचुरता होती है| जहाँ रामलीला में राम की कथा लीला रूप में कही जाती है, वहीं रासलीला में भी कृष्ण के अवतारी कथा का उसके तमाम आयामों के साथ वर्णन प्रस्तुत किया जाता है| रासलीला और रामलीला में कुछ बुनियादी अन्तर भी देखने को मिलता है, जहाँ रामलीला में राम की कथा बहुत ही सुसंबद्ध रूप में कही जाती हैं, वहीं रासलीला में कथा का रूप इतना सुव्यवस्थित नहीं होता| इसके बाद भी रासलीला में भी कथा के पारंपरिक मांग के अनुसार खलनायक के रूप में पूतना, कंस आदि चरित्रों की उपस्थिति बनी रहती है| ये खल चरित्र अपने अत्याचार और ज्यादतियों से जनसामान्य का शोषण करते हैं, और कृष्ण ही इनका मर्दन कर जनसामान्य को अभय करते हुए नजर आते हैं|

राम की मिथकीय कथा 'रामलीला' का तो मुख्य विषयवस्तु है ही, इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य महत्वपूर्ण लोकनाट्य रूपों यथा, यक्षगान, भागवतमेल, कुटियाट्टम, दशावतार, भवाई आदि में भी रामकथा के प्रख्यात प्रसंगों की उपस्थिति देखी जा सकती है। कृष्ण-कथा के संबंध में बात करें तो बंगाल के जात्रा और असम के अंकिया नाट्य का संबंध इससे जुड़ता हुआ नजर आता है| अंकिया नाट्य असम का प्रमुख लोकनाट्य रूप है| इसके कथा स्रोतों में भगवदगीता और हरिवंशपुराण की कथाएँ प्रमुख रूप से शामिल हैं|

'यात्रा' बंगाल तथा उड़ीसा का अति प्रचलित लोकनाट्य रूप है| इसे जात्रा नाम से भी पुकारा जाता है| इस लोकनाट्य रूप में भी संगीत और नृत्य ही प्रधानता होती है| जात्रा का एक ख़ास रूप 'पौराणिक जात्रा' के नाम से जाना जाता है; इस पौराणिक जात्रा के कथ्य का मुख्य आधार रामायण, महाभारत की मिथकीय कथाएँ ही हैं| जिस तरह जात्रा में भी रामकथा की उपस्थिति देखी जा सकती है, उसी तरह अंकिया नाट्य में भी अल्प मात्रा में ही सही, पर राम कथा के दर्शन हो ही जाते हैं|

कर्नाटक प्रदेश भारत के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है| यक्षगान यहाँ का प्रचलित लोकनाट्य रूप है| यक्षगान में भी मिथकीय कथाओं की पर्याप्त उपस्थिति देखी जा सकती है| यक्षगान में दिखाए जाने वाले खेल को 'आटा' नाम से संबोधित किया जाता है| चूँकि आटा में भगवान विष्णु के दशावतार की कथा सम्मिलित होती है, इस कारण इसे दशावतार आटा नाम से भी पुकारा जाता है| यक्षगान में कृष्ण और राम की कथा भी बहुतायत में प्रदर्शित की जाती है| महाभारत के भी बहुत से प्रचलित प्रसंग इसके विषयवस्तु हैं|

मध्यभारत के लोकनाट्य रूप की बात करें तो 'माच' का नाम प्रमुखता से उभर कर सामने आता है| माच मध्यप्रदेश का मुख्य लोकनाट्य रूप है; वैसे इसका विस्तार राजस्थान में भी है| मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में प्रचलित ढारा-ढारी के खेल को इस नाट्य रूप का उद्भव स्रोत माना जाता है| माच के प्रदर्शन में प्रस्तुत होने वाली तमाम कथाओं में राम, कृष्ण की लीला के अतिरिक्त प्रहलाद, सत्यवान-सावित्री, श्रवणकुमार, हरिश्चंद्र, राजा भर्तहरी, सती अनुसूया आदि की मिथकीय कथाएँ भी शामिल हैं|

भवाई गुजरात का प्रमुख लोकनाट्य रूप है| इसका अल्प विस्तार राजस्थान में भी दिखाई देता है| भवाई में भी कुछ मिथकीय कथाओं की उपस्थिति प्रमुखता के साथ देखी जा सकती है| रामायण के बहुत से प्रसंग यथा, राम-लक्ष्मण शिक्षा, ताड़का वध आदि भवाई के प्रदर्शन के महत्वपूर्ण विषयवस्तु हैं|

राजस्थान में भवाई और माच आदि लोकनाट्यों की लघु परंपरा के अतिरिक्त 'ख्याल' नामक लोकनाट्य रूप का भी चलन है| वे मिथकीय प्रसंग जो जनमानस के अति श्रद्धा के विषयवस्तु होते हैं, और जिनसे जनमानस तप, कर्म, त्याग आदि उच्चतर गुणों की सीख लेता है, ख्याल में ऐसे मिथकीय प्रसंगों की बहुतायत में प्रस्तुति होती है| ख्याल के प्रमुख मिथकीय प्रसंगों

में राजा हरिश्चन्द्र, सुदामा आदि की कथा प्रमुखता से शामिल है|

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध लोकनाट्य रूप 'तमाशा' की गणना भी देश के सुविख्यात लोक नाटकों में की जाती है| इसे महाराष्ट्र में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त है| इस विधा से महाराष्ट्र के लोगों का गहरा जुड़ाव है| तमाशा में भी यदा-कदा मिथकीय कथाओं की प्रस्तुति देखी जा सकती है| महाराष्ट्र का ही एक और प्रसिद्ध लोकनाट्य रूप है, इसे 'दशावतार' नाम से संबोधित किया जाता है| इसके नाम से ही इसके मिथकीय कथानक के साथ प्रमुखता से जुड़े होने की पुष्टि हो जाती है| इसमें विष्णु के दस अवतारों, यथा- मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि की नाट्यात्मक प्रस्तुति होती थी| वर्तमान में इस नाट्य रूप का चलन बहुत नहीं है, पर उन्नीसवीं शती के पूर्व में महाराष्ट्र के बड़े भाग पर इस शैली के नाटकों का बहुत गहरा प्रभाव था।

'नौटंकी' उत्तरप्रदेश का प्रमुख लोकनाट्य रूप है| नौटंकी का चलन उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त राजस्थान में भी है| रामलीला, रासलीला, अंकिया नाट्य, यक्षगान, दशावतार आदि की तरह 'नौटंकी' में भी मिथकीय कथाओं की प्रस्तुति होती है| यद्यपि नौटंकी की कथाओं का अन्य विशाल स्रोत भी है, तथापि मिथक की आभा भी इस पर यदा-कदा नजर आती ही रहती है|

इसप्रकार देखा जाए तो भारत के उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम चारों दिशाओं में फले-फुले लोक नाटकों में मिथक अपनी प्रगाढ़ता के साथ मौजूद है। भारत में प्रचलित विविध लोककला रूपों और जातीय संस्कृति के बीच अति गहरा अंतर्संबंध है| जातीय संस्कृति का सरल सा अभिप्राय है- वह संस्कृति जो सीधे तौर पर लोक से जुड़ी हो; जिसमें लोक का अतीत और वर्तमान रचा बसा हो| हरिशंकर परसाई जोर देकर कहते हैं कि संस्कृति सदैव लोक की ही होती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी जातीय संस्कृति को जनता की संस्कृति मानते हुए स्पष्ट करते हैं कि इस जनता के ज्ञान और अनुभव का आधार पोथियां नहीं होती| ये लोग नगर में परिष्कृत रुचि संपन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती है उनको उत्पन्न करते हैं।

जातीय संस्कृति की सहज-सरल धारा से जुड़े होने के कारण ही लोकनाट्य रूपों के लिए खुद को और गहराई देना, साथ ही साथ अपने कथा स्रोतों को भी व्यापक और जनस्पंदन को छूने की क्षमता से लैस करना अनिवार्य हो जाता है; ऐसी स्थिति में निश्चित तौर पर मिथकीय कथा उनके लिए एक बेहतर और प्रभावी कथा स्रोत के रूप में उभरकर सामने आती है|

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1) शर्मा, एच. एल. (1990). लोक वार्ता विज्ञान (खण्ड 1). लखनऊ : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
2) मेघ, आर. के. (2008). मिथक से आधुनिकता तक. दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
3) रंगाचार्य, ए. (1974). भारतीय रंगमंच. नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया.
4) रानी, जी. (2009). आठवें दशक का हिंदी नाटक मिथकीय अध्ययन. दिल्ली : बुकमार्ट पब्लिशर्स.
5) रानी, जी. (2009). मिथक सिद्धांत और स्वरूप. दिल्ली : बुकमार्ट पब्लिशर्स.
6) दास, श्रीकृष्ण. (1956). हमारी नाट्य परंपरा. प्रयाग : साहित्यकार-संसद.
7) त्रिपाठी, वी. एन. (2001). भारतीय लोकनाट्य. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
8) भानावत, एम. (1971). लोकरंग. उदयपुर : भारतीय लोक कला मण्डल.